महाभारत में महिलाओं की भूमिका

DR P M SHARMILA

Assistant Professor

Government first grade college Vijaynagar

Bangalore Karnataka -104

प्रस्तावना: महाभारत, भारतीय इतिहास के दो महत्वपूर्ण संस्कृत महाकाव्यों में से एक है, जो केवल महान योद्धाओं और महाकाव्यिक युद्धों की कहानी नहीं है, बल्कि उस समय की महिलाओं के विविध भूमिकाओं की कहानियों का भी एक बहुमूल्य स्रोत है। यह अक्सर पुरुष-केंद्रित काव्य के रूप में जाना जाता है, लेकिन महाभारत में विभिन्न रूपों में उपस्थित महिला पात्रों की कहानियों को दिखाने के लिए एक विस्तारित ज्ञान है, जिन्होंने कहानी के प्रक्रिया को आकार दिया। इस ब्लॉग में, हम महाभारत में महिलाओं की बहुमुखी भूमिकाओं का अन्वेषण करेंगे और उनके महाकाव्य के व्यापक विषयों में महत्व को समझेंगे।महाभारत के समय में महिलाएं किसी न किसी पुरुष की माँ, पत्नी, बेटी या बहन के रूप में होती थीं.। महाभारत में महिलाओं को तलाक़ का अधिकार नहीं था.। महाभारत के समय तक महिलाओं ने अपनी आखिरी आज़ादी खो दी थी, यानी अविवाहित रहने का अधिकार.। महाभारत में नारी ने अपनी प्रतिभा और क्षमता से जीवन को गौरवान्वित किया है.। नारी ने परिवार, समाज, और राष्ट्र के प्रति व्यक्ति के कर्तव्यों को दिशा-निर्देश दिया है.। नारी ने जननी, पत्नी, पुत्री, और भगिनी के रूप में पुत्र, पति, पिता, और भ्राता को विकट परिस्थितियों में सहारा दिया है.। महाभारत में नारी का अपमान करना क्षम्य नहीं था. द्रौपदी के अपमान की गूंज महाभारत के सभी पर्वों में सुनाई पड़ती है. । महाभारत में.नारी ने अपनी प्रतिभा तथा क्षमता से जीवन को गौरवान्वित किया है। परिवार, समाज तथा राष्ट्र के प्रति व्यक्ति के कर्त्तव्यों को दिशानिर्देश दिया है। जननी, पत्नी, पुत्री तथा भगिनी के रूप में उसने पुत्र, पति, पिता तथा भ्राता आदि को विकट परिस्थिति में सम्बल प्रदान किया है। उसका मार्गदर्शन प्रेरणास्पद है। नारी के अवदान के बिना समाज तथा राष्ट्र की प्रगति तथा उन्नति अकल्पनीय है। अपार ऊर्जा से सम्पन्न नारी ने बाधाओं को पार करने में अपनी प्रतिभा को उजागर किया है।

मूलशब्द: महिला महाभारत ,चरित्र, पुरुष, भूमिका, चित्रण ,महिल, प्रभाव.

परिचय

महाभारत की स्त्री, स्त्रीत्व के समस्त गुणों से युक्त होते हुये भी अपनी अस्मिता और दायित्व का निर्वाह करने वाली है । गान्धारी, कुन्ती, द्रौपदी जैसे स्त्री पात्रों की श्रेष्ठता, उपादेयता और सार्थकता का निदर्शन कराने के लिये ही मैंने महाभारतकालीन प्रमुख स्त्री पात्रों को अपने शोध का विषय बनाया है।महाभारत में हर महिला किसी न किसी पुरुष की माँ, पत्नी, बेटी या बहन के रूप में प्रवेश करती है। वह एक तरह की रानी / बहादुर योद्धा / महान शिष्य / बुद्धिमान शिक्षक की व्यक्तिगत पहचान का आनंद नहीं लेती है।महाभारत से बहुत पहले, पुरुष और महिलाएं किसी के साथ भी यौन संबंध बनाने के लिए स्वतंत्र थे। ऋषि श्वेतकेतु ने इस प्रथा को बंद कर दिया। फिर भी, बाद में महिलाओं को तलाक का कोई अधिकार नहीं था। और महाभारत के समय तक उसने अपनी आखिरी स्वतंत्रता खो दी थी, अविवाहित रहने का अधिकार।महाभारत के अनुसार, 'वह घर, घर नहीं जिसमें पत्नी नहीं। गृहिणीहीन घर 'जंगल' की तरह है। पुराणों में वर्णित है कि स्त्रियां युद्ध भूमि में भी अपनी वीरता का परिचय देती थीं। त्रेतायुग में श्रीराम के जन्म से पहले, उनकी माता कैकेयी पिता दशरथ के साथ न केवल युद्ध भूमि में जाती थीं, बल्कि शौर्य का परिचय युद्ध भूमि में देती थींमहाभारत की स्त्री, स्त्रीत्व के समस्त गुणों से युक्त होते हुये भी अपनी अस्मिता और दायित्व का निर्वाह करने वाली है । गान्धारी, कुन्ती, द्रौपदी जैसे स्त्री पात्रों की श्रेष्ठता, उपादेयता और सार्थकता का निदर्शन कराने के लिये ही मैंने महाभारतकालीन प्रमुख स्त्री पात्रों को अपने शोध का विषय बनाया है।

महाभारत में महिलाओं की स्थिति

महाभारत में हर महिला किसी न किसी पुरुष की माँ, पत्नी, बेटी या बहन के रूप में प्रवेश करती है। वह एक तरह की रानी / बहादुर योद्धा / महान शिष्य / बुद्धिमान शिक्षक की व्यक्तिगत पहचान का आनंद नहीं लेती है।महाभारत से बहुत पहले, पुरुष और महिलाएं किसी के साथ भी यौन संबंध बनाने के लिए स्वतंत्र थे। ऋषि श्वेतकेतु ने इस प्रथा को बंद कर दिया। फिर भी, बाद में महिलाओं को तलाक का कोई अधिकार नहीं था। और महाभारत के समय तक उसने अपनी आखिरी स्वतंत्रता खो दी थी, अविवाहित रहने का अधिकार।नारी के अवदान के बिना समाज तथा राष्ट्र की प्रगति तथा उन्नति अकल्पनीय है। अपार ऊर्जा से सम्पन्न नारी ने बाधाओं को पार करने में अपनी प्रतिभा को उजागर किया है। उसका बहुआयामी चरित्र प्रशंसनीय तथा वन्दनीय है।

पारिवारिक तथा सामाजिक परिप्रेक्ष्य में नारी का चिन्तनमनन दिशा-बोध से संयुक्त है। कला तथा संस्कृति को जीवन्त रखने में उसका अनुदान प्रशंसनीय है । राजनीतिक तथा सामरिक पटल पर उसकी ऊर्जा, साहस तथा धैर्य अविस्मरणीय हैं, जीवित-जागृत राष्ट्र की वह प्रतीक है। उसके हाथों में प्रत्यक्ष रूप से शासनाधिकार न होने पर भी उसने राजनीतिक पटल पर अपनी अमिट छाप अंकित की है।

महाभारत महासमर पर दृष्टिपात किया जाये तो यह स्पष्ट है कि नारी का अपमान करना क्षम्य नहीं है। द्रौपदी के अपमान की गूंज महाभारत के सभी पर्वों में सुनायी पड़ती है। कौरवपाण्डव महासमर में भूमि-स्वामित्व का प्रश्न दोनों पक्षों को विचलित करता रहा। कटु वचन, प्रतिशोध का भाव, जातिगत द्वेष की अग्नि तथा कुल-कलह महाभारत युद्ध के आधार बने । महासमर में कौरव पक्ष नि:शेष हो गया। महाभारत महासमर में जन-धन की अपार क्षति हुई, निष्कर्ष रहा – न युद्धे तात कल्याणं न धर्मार्थो कुतः सुखम् ।

महाभारत में हर चरित्र की अपनी अलग कहानी है। महाभारत के हर चरित्र की जिंदगी रहस्यों से भरी हुई है। सभी की एक पूर्वजन्म से जुड़ी कहानी है, जिसके कारण उन्हें अगले जन्म में संघर्ष झेलना पड़ा। यही नहीं, महाभारत के कुछ चरित्रों का जीवन शापित भी था, जिसके कारण उन्हें धरती पर जन्म लेकर महाभारत के युद्ध में अहम भूमिका निभानी पड़ी। महाभारत के पुरुष योद्धा ही नहीं बल्कि महिलाएं भी एक योद्धा ही हैं, जिन्होंने कभी शस्त्र नहीं उठाया लेकिन महाभारत में फिर भी उनकी भूमिका रही थी। इसका अर्थ यह है कि महाभारत का असर उनके जीवन पर भी पड़ा ही था। आज हम आपको महाभारत की ऐसी शक्तिशाली महिलाओं के बारे में बता रहे हैं, जिनकी बात को कोई नहीं टालता था।

विविध महिला पात्र

महाभारत में विविध प्रकार की महिला पात्रों से परिचय देता है, जिनमें प्रत्येक की अपनी अनूठी गुणवत्ताएँ और योगदान होता है। यहां कुछ प्रमुख उदाहरण हैं:

रानी सत्यवती

महाभारत में रानी सत्यवती का व्यक्तित्व भी बहुत प्रभावशाली था। रानी सत्यवती की बात को भी कोई नहीं टालता था। सत्यवती के कहने पर ही महर्षि व्यास ने अपनी विद्या का प्रयोग किया, जिसके बाद पांडु, धृतराष्ट्र और विदुर का जन्म हुआ। रानी सत्यवती की बात को भीष्म पितामहा ने भी कभी नहीं टाला। रानी सत्यवती भीष्म की सौतेली मां थी लेकिन भीष्म फिर भी रानी सत्यवती का बहुत आदर करते थे ।सत्यवती, व्यास की मां, कुरु वंश की वंशवाद के लिए महत्वपूर्ण हैं। उनके कार्यों ने धृतराष्ट्र और पांडु के जन्म को संभाला है, जो कथा के महत्वपूर्ण पात्र हैं। हिडिम्बी और सुभद्रा: ये पात्र विवाह के माध्यम से गठबंधन का प्रतिनिधित्व करते हैं। हिडिम्बी भीम से और सुभद्रा अर्जुन से विवाह करती हैं।सत्यवती, ब्रह्मा के शाप से मत्स्यभाव को प्राप्त हुई अप्सरा "अद्रिका" के गर्भ से पैदा हुई थीं. सत्यवती का विवाह हस्तिनापुर के राजा शांतनु से हुआ था. सत्यवती ने अपने स्वार्थ के लिए भीष्म को राजा नहीं बनने दिया था. सत्यवती ने अपने पुत्रों के स्वार्थ के लिए नियोग जैसी विधि को अपनाया था. सत्यवती के पुत्रों के नाम थे - चित्रांगद, विचित्रवीर्य, और वेदव्यास. सत्यवती ने अपने पुत्र वेदव्यास को बुलाकर अंबिका और अंबालिका से विवाह करवाया था. सत्यवती के चलते ही भीष्म ने आजीवन हस्तिनापुर के राजा की रक्षा का प्रण लिया था. सत्यवती को मत्स्यगंधा के नाम से भी जाना जाता था. रानी सत्यवती की

बात को भी कोई नहीं टालता था। सत्यवती के कहने पर ही महर्षि व्यास ने अपनी विद्या का प्रयोग किया, जिसके बाद पांडु, धृतराष्ट्र और विदुर का जन्म हुआ। रानी सत्यवती की बात को भीष्म पितामहा ने भी कभी नहीं टाला। रानी सत्यवती भीष्म की सौतेली मां थी लेकिन भीष्म फिर भी रानी सत्यवती का बहुत आदर करते थे और उन्होंने कभी भी रानी सत्यवती की बात नहीं टाली।

द्रौपदी:

द्रौपदी एक ऐसा चरित्र था, जिसके अपमान के कारण महाभारत का युद्ध छिड़ा था।पांडवों की पत्नी द्रौपदी, महाभारत में एक प्रमुख महिला पात्र है। उनकी अतल संकल्पना, शक्ति और सहनशीलता उन्हें महिलाओं की शक्ति के प्रतीक के रूप में बनाती हैं। द्रौपदी की जुआ के खेल में और उनके उपरांत हुई अपमान का अधिकांश महाभारत की कथा को चलाने का कारण होता है।द्रौपदी का व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली था। द्रौपदी के पांच पति थे। पांचों ही द्रौपदी को बहुत प्रेम और आदर देते थे लेकिन इनमें से अर्जुन, भीम और युधिष्ठिर द्रौपदी की बात को कभी नहीं टालते थे। यही, कारण है कि जब द्रौपदी का युद्ध छिड़ा, तो द्रौपदी के कहे अनुसार भीम ने दुशासन को मारकर उसके रक्त ने द्रौपदी के केश धोए थे। महाभारत में द्रौपदी एक महत्वपूर्ण पात्र थीं। द्रौपदी, पांचाल देश के राजा द्रुपद की पुत्री थीं। द्रौपदी को पंचकन्याओं में से एक माना जाता है.। उन्हें कृष्णेयी, यज्ञसेनी, महाभारती, सैरंध्री, पांचाली, अग्निसुता जैसे नामों से भी जाना जाता है.। द्रौपदी का जन्म अग्नि से हुआ था,। इसलिए भारत के कुछ गांवों में उन्हें काली माता का अवतार माना जाता है.। ।द्रौपदी सांवली थीं, इसलिए उन्हें कृष्णा नाम भी दिया गया। द्रौपदी राजा द्रुपद द्वारा किए गए यज्ञ कुंड से उत्पन्न हुई थीं, इसलिए उन्हें यज्ञसेनी भी कहा जाता है। ।द्रौपदी, पांडु पुत्रों युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, और सहदेव की पत्नी थीं.। और पतियों के प्रति उनका समभाव था. वह पांचों से संतुष्ट थीं.। द्रौपदी के बारे में कहा जाता है कि वह देवी काली का अंशावतार थीं। द्रौपदी के पिछले जन्म में उनका नाम नलयनी था और वे एक गरीब ब्राह्मणी थीं.।

- **गांधारी**

गांधारी राजा धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी अपने पति के प्रति वफादारी और आंधे प्रेम के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अपनी आंखों पर पट्टी बंधने का निर्णय लिया, जो उनके बलिदान का प्रतीक है।महाभारत की कथा में गांधारी एक महत्वपूर्ण महिला पात्र हैं: गांधारी, धृतराष्ट्र की पत्नी थीं और दुर्योधन समेत कौरवों की मां थीं. ।गांधारी, गंधार देश के राजा सुबल की बेटी थीं.। गांधारी को एक आदर्श नारी माना जाता है. । धृतराष्ट्र जन्म से नेत्रहीन थे। गांधारी ने अपने पति के जन्म से नेत्रहीन होने के कारण, आजीवन अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली थी। गांधारी को भगवान शिव से एक वरदान मिला था कि वह जिस किसी को भी नग्न अवस्था में देखेंगी, उसका शरीर वज्र का हो जाएगा. ।गांधारी ने अपने ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन को नग्न अवस्था में देखना चाहा था, ताकि वह अमरत्व प्राप्त कर सके और उसे युद्ध में हरा पाना मुश्किल हो जाए. गांधारी महाभारत का युद्ध नहीं चाहती थीं. ।

कुंती:

पांडवों की मां कुंती, अपने पुत्रों के भाग्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनकी गोपनीय मंत्र का उपयोग देवताओं को बुलाने के लिए और उनके मां के रूप में आदर्श देने के निर्णयों का दूर-रेच क्या होता है।गांधारी के बाद कुंती महाभारत के पटल पर एक शक्तिशाली महिला बनकर हस्तिनापुर में प्रवेश करती है। कुंती और माद्री दोनों ही पांडु की पत्नियां थीं। यदि पांडु को शाप नहीं लगता तो उनका कोई पुत्र होता, जो गद्दी पर बैठता लेकिन ऐसा नहीं हुआ। तब पांडु के आग्रह पर कुंती ने एक-एक कर कई देवताओं का आवाहन किया।कुंती, यदुवंशी राजा शूरसेन की पुत्री थीं. उनका असली नाम पृथा था. ।कुंती के पिता शूरसेन के फुफेरे भाई कुंतीभोज की कोई संतान नहीं थी. इसलिए शूरसेन ने कुंती को कुंतीभोज को गोद दे दिया था. कुंती, भगवान श्रीकृष्ण की बुआ थीं. कुंती के छोटे भाई का नाम वासुदेव था और वे श्रीकृष्ण के पिता थे. ।कुंती का विवाह पांडु से हुआ था. ।कुंती ने सूर्य देवता का आवाहन करके कर्ण को जन्म दिया था. ।कुंती ने कर्ण को एक संदूक में डालकर नदी में बहा दिया था. ।कुंती ने पांडु से युधिष्ठिर, भीम, और अर्जुन को जन्म दिया था. ।महाभारत के युद्ध में कर्ण की मृत्यु के बाद, युधिष्ठिर ने कुंती को श्राप दिया था. ।युधिष्ठिर ने कहा था कि अब से पूरी स्त्री जाति कोई भी बात अपने पेट में नहीं छिपा पाएगी. ।युधिष्ठिर ने समस्त नारी जाति को कौन सा श्राप दिया था और उसके पीछे .।. पांडवों की माता था। पांडव अपनी मां की बातों को कभी नहीं टालते थे। यही कारण है कि जब अर्जुन ने स्वंयवर जीतकर द्रौपदी से विवाह किया था, तो घर जाने पर कुंती ने अर्जुन की पूरी बात को समझे बिना ही लाई हुई चीज

को आपस में बांटने के लिए कहा लेकिन जब कुंती को यह बात पता चली कि अर्जुन ने द्रौपदी को स्वंयवर में जीतकर लाने की बात कही है, तो कुंती बहुत क्रोधित हो गई और क्रोध में आकर उन्होंने कहा कि अगर कोई वे अपनी पत्नी को किसी वस्तु की तरह सम्बोधित कर रहे थे, तो फिर वे पांचों वास्तव में द्रौपदी से ही शादी कर लें। अंत में अपनी मां की बात को पांचों पांडव ने मान लिया था।

हिडिम्बा

महाभारत में हिडिम्बा एक राक्षसी थीं और भीम की पत्नी थीं: हिडिम्बा, राक्षस राजा हिडिम्ब की बहन थीं. हिडिम्बा, माता महाकाली की भक्त थीं और उन्हें रोज़ाना एक इंसान की बलि चढ़ानी होती थी. ।हिडिम्बा ने प्रण लिया था कि जो भी उसके भाई हिडिम्ब को युद्ध में हराएगा, उससे ही वह शादी करेगी.। अज्ञातवास के दौरान पांडव मनाली के जंगलों में आए थे, जहां उनका राक्षस हिडिम्ब से भीम का युद्ध हु.। भीम ने हिडिम्ब को हराकर उसकी हत्या कर दी और इसके बाद हिडिम्बा ने भीम से शादी कर ली।. हिडिम्बा और भीम के बेटे का नाम घटोत्कच था ।. लोक कथाओं के मुताबिक, हिडिम्बा राक्षसी की पूजा की जाती है. ।हिडिंब या हिडिम्ब या हिडिंबसुर महाभारत काल का एक राक्षस राजा था, जो अपनी बढी बहन हिडिंबा के साथ मिलकर वन में रहा करता था। उसकी बढी बहन हिडिंबा माता महाकाली की भक्त थी और उसे प्रतिदिन चढ़ावे के रूप में एक मनुष्य की बलि माता को देनी होती थी।

सुभद्रा

सुभद्रा महाभारत काल में श्री कृष्ण और बलराम की बहन थीं। एक समय अर्जुन सुभद्रा की खूबसूरती पर मोहित हो गए और उनसे शादी का प्रस्ताव रखा। उस समय कृष्ण ने अर्जुन को सलाह दी कि वो सुभद्रा को लेकर भाग जाएं क्योंकि सुभद्रा के भाई बलराम दुर्योधन से उसकी शादी करना चाहते थे।सुभद्रा अर्जुन से प्रेम करती थी। इस कारण से ही सुभद्रा अर्जुन से विवाह करना चाहती थी लेकिन अर्जुन का विवाह पहले ही द्रौपदी से हो चुका था। इस कारण से अर्जुन ने पहले विवाह से मना कर दिया था लेकिन सुभद्रा ने अर्जुन के साथ विवाह की इच्छा नहीं छोड़ी और अपने भाई श्रीकृष्ण से हठ कर लिया कि वे अर्जुन से ही विवाह करेगी। अपनी बहन की बात को श्रीकृष्ण टाल न सके और उन्होंने अर्जुन का विवाह सुभद्रा से करा दिया। अभिमन्यु सुभद्रा और अर्जुन के पुत्र थे।

विषय और महत्व:

महाभारत में महिलाओं की भूमिकाएँ कुछ मुख्य विषयों में योगदान करती हैं:

1. धर्म: महिला पात्रों ने अक्सर विभिन्न तरीकों से धर्म (कर्तव्य और नैतिकता) का पालन किया। द्रौपदी की न्याय की मांग, कुंती का अपने पुत्रों के प्रति भक्ति और गांधारी का अपने पति के प्रति निष्ठा, सभी धर्म के पहलु को प्रकट करते हैं।
2. शक्ति और प्रभाव: महाभारत में महिलाएं पार्दे के पीछे शक्ति और प्रभाव डालती हैं। वे शायद युद्ध-क्षेत्र पर न हों, लेकिन उनके निर्णय और क्रियाएँ राजाओं और राज्यों के भाग्य को आकार देती हैं।
3. त्याग: कई महिला पात्र बड़े भले के लिए महत्वपूर्ण त्याग करती हैं। कुंती का गुप्त और गांधारी की आँखों पर पट्टी बंधना अलग-अलग प्रकार के निःस्वार्थ कार्यों का उदाहरण है।
4. स्वतंत्रता: उनका प्रदर्शन करते हैं, महाभारत में भारतीय समाज के पुरुष-प्रधान समाज के बावजूद, महिला पात्र अक्सर स्वतंत्रता दिखाते हैं और जब जरूरत होती है, कार्यों को अपने हाथ में लेते हैं।

निष्कर्ष: महाभारत विभिन्न प्रकार की महिलाओं का विस्तारित और उदारणात्मक चित्रण प्रदान करता है, जो उनकी शक्ति, स्वतंत्रता, और विविध भूमिकाओं का प्रमुखन बताते हैं। हालांकि यह सत्य है कि महाकाव्य प्रमुख रूप से पुरुष पात्रों और उनकी टकरावों के चारों ओर घूमता है, महाभारत में महिलाएं उसकी कथा को चलाने के और भी कई आधार देती हैं और आज के समय में उनके अद्भुत योगदान और आदर्श के विषय में अध्ययन और प्रशंसा के विषय के रूप में बने रहते हैं। उनकी कथाएँ इतिहास में महिलाओं की दुर्बल शक्ति और सहनशीलता के अदृश्य बांधन का प्रमाण हैं।महाभारत से यह स्पष्ट उत्तर मिलता है कि किसी भी कीमत पर महिलाओं का सम्मान किया जाना चाहिए। भीष्म पितामह कहते हैं कि जिस घर में महिलाओं का अपमान होता है, जहाँ महिलाएँ दुख में रोती हैं, वह निश्चित रूप से बर्बाद हो जाता है। ऐसा परिवार जल्द ही नष्ट हो जाएगा। ठीक वैसा ही जैसा कौरवों के साथ हुआ था। माता द्रौपदी के अपमान के कारण पूरा परिवार बिखर गया। एक महिला की पूजा करना भगवती माता लक्ष्मी की पूजा करने के समान है।

सन्दर्भ

1 Joshi, Dr Dinkar (2020-01-01). Mahabharat : Ek Darshan: Bestseller Book by Dr. Dinkar Joshi: Mahabharat : Ek Darshan (ebook). Prabhat Prakashan. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-93-84343-57-6.

2 सिन्हा, सुजाता; सिंह, उर्मिला; वर्मा, हेमा (2007). महाभारतकालीन भारतीय संस्कृति. Viśvabhāratī Pablikeśansa. पपृ॰ 203–205. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-89000-75-2.

3 Dutt, Manmatha Nath; Datta, Manmathanatha (1895). A Prose English Translation of the Mahabharata:(tr. Literally from the Original Sanskrit Text) (अंग्रेज़ी में). H.C. Dass. पृ॰ 344.

4 "हिन्दुपिडिया-महाभारत". मूल से 5 जनवरी 2010 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 4 अप्रैल

5 The Mahabharata – १; The Book of the Beginning. Introduction (Authorship and Date)

6 The Mahabharata: How an oral narrative of the bards became a text of the Brahmins". मूल से 15 अप्रैल 2018 को.

महाभारत (हिन्दी में सम्पूर्ण कथा)